पी ए यू विशेषज्ञों का गैर-रासायनिक ढंग से गेहूं में गुल्लीडंडा या मंडूसी की रोकथाम के बारे में सुझाव

पंजाब कृषि विश्वविद्यालय (पी ए यू), लुधियाना के विशेषज्ञों ने किसानों को गुल्लीडंडा या मंडूसी के प्रति आगाह किया है, जो गेहूं में सबसे अधिक परेशानी पैदा करने वाली घास है। पी ए यू के कुलपति सतबीर सिंह गोसल ने चेतावनी दी कि अगर गुल्लीडंडा या मंडूसी पर समय रहते नियंत्रण नहीं किया गया तो गेहूं की पैदावार कम हो जाएगी।

गुल्लीडंडा प्रबंधन के बारे में बोलते हुए, पी ए यू कृषि विज्ञान विभाग के प्रमुख एम एस भुल्लर ने कहा, "सामान्य तौर पर, पहली सिंचाई के बाद लगाए जाने वाले खरपतवार नाशकों का उपयोग इसके नियंत्रण के लिए किया जाता है। खरपतवार ने अपने नियंत्रण के लिए उपयोग किए जाने वाली खरपतवार नाशकों के लिए प्रतिरोध विकसित कर लिया है। खासकर उन खेतों में जहां साल-दर-साल एक ही रसायन लगाया जाता है, जिससे गेहूं के खेतों में गुल्लीडंडा या मंडूसी का नियंत्रण मुश्किल हो जाता है। इन परिस्थितियों में, उगने से पहले शाकनाशी का उपयोग अधिक फायदेमंद होता है क्योंकि ये शाकनाशी गुल्लीडंडा के अंकुरण को रोकते हैं।"

उन्होंने कहा कि बुवाई के समय उपयोग किए जाने वाले शाकनाशी गुल्लीडंडा को पनपने नहीं देते। भुल्लर ने गेहूं की बुवाई के तुरंत बाद या दो दिन के भीतर किसी एक खरपतवार नाशक जैसे कि स्टॉम्प/बंकर/दोस्त 30 ईसी (पेंडिमेथालिन) @ 1.5 लीटर या अकीरा/ मोमीजी 85 डब्लूजी (पायरोक्सासल्फोन) @ 60 ग्राम या प्लेटफ़ॉर्म 385 एसई (पेंडिमेथालिन प्लस मेट्रिब्यूज़िन) @ 1 लीटर या डक्षप्लस 48 ईसी (पेंडिमेथालिन प्लस मेट्रिब्यूज़िन) 900 मिलीलीटर प्रति एकड़ की दर से छिड़काव की सलाह दी।

"घास के उभरने पहले वाले शाकनाशी के छिड़काव के लिए प्रति एकड़ 200 लीटर पानी और फ्लड जेट/फ्लैट फैन नोज़ल का उपयोग करें। लकी सीड ड्रिल के उपयोग को प्राथमिकता दें जिससे गेहूं की बुवाई भी होती है और साथ ही शाकनाशी का छिड़काव भी करती है," उन्होंने सलाह दी।

उन्होंने कहा, जब अच्छी तरह से तैयार नमी वाले खेत में, ढेलों से मुक्त, समान रूप से छिड़काव किया जाता है, तो शाकनाशी अच्छा खरपतवार नियंत्रण प्रदान करते हैं क्योंकि शाकनाशी को सक्रिय होने के लिए नमी की आवश्यकता होती है।

पी ए यू के फ़सल विज्ञानियों ने बताया है कि गैर-रासायनिक ढंग से भी गेहूं में गुल्लीडंडा या मंडूसी खरपतवार की बुवाई के समय रोकथाम की जा सकती है। भुल्लर ने बताया कि सरफेस सीडिंग-कम-मल्चिंग तकनीक से बोई गेहूं में गुल्लीडंडा व अन्य खरपतवारों की प्रभावशाली रोकथाम हो सकती है।

इस विधि से बोई गई गेहूं वाले खेत को पूरी तरह धान की पराली से ढका जाता है जो खरपतवारों को पनपने से रोकता है। इसी तरह है हैपी सीडर के उपयोग से धान के अवशेषों में बोई गई गेहूं में भी खरपतवार बहुत कम होते हैं क्योंकि पराली खरपतवार को काबू में रखती है।

भुल्लर ने कहा इस लिए गुल्लीडंडा या मंडूसी की समस्या वाले खेतों में सरफेस सीडिंग-कम-मल्चिंग तकनीक या हैपी सीडर से गेहूं की बुवाई से इस खरपतवार की रोकथाम की जा सकती है।